International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.972 Volume 10, Issue 3, March 2023
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

नारी चेतना में परिदृश्य एवं उसका विषयक विभिन्न द्रष्टिकोण

MOHAN LAL

RESEARCH SCHOLAR

DR. ASHISH KUMAR TIWARI

SUPERVISOR

SHRI KRISHNA UNIVERSITY, CHHATARPUR (M.P.)

सार

भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन कब हुआ था इसका प्रमाणित समय बताना कठिन है। इसके बारे में कोई निश्चित प्रमाणित सामग्री उपलब्ध नहीं है उतर वैदिक काल से नारी पर जैसे-जैसे बन्धन जटिल होते गये उसमें मुक्ति की कामना भी तीव्र होती गई। पर कालान्तर में नारी ने अपने जीवन की स्थितियों को नियति मान उसे लगभग स्वीकार कर लिया। मध्यकाल से नवजागरण काल तक का इतिहास इसी समझौते का प्रत्यक्ष प्रमाण है भारत में नारी की मुक्ति का अर्थ पुरुष सता से मुक्ति कभी नहीं रहा । राष्ट्रीय समस्याओं की स्त्रियों ने प्रारम्भ से पुरुषों के साथ मिलकर ही सुलझाया। भारत पर जब कभी आक्रमण हुए उस समय राज्य का प्रशासन स्वयं सँभाल, युद्ध के लिए पति और पुत्रों में साहस का संचार करनेवाली स्त्रियों की अनेक कथाएँ इतिहास में हैं । 1857 ई. के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, जमानी बेगम, देवी चौधरानी कितूर की रानी चेनम्मा जैसी वीर महिलाओं ने अपनी राष्ट्रीय चेतना का परिचय दिया ।

मुख्यशब्द :- नारी, चेतना, परिदृश्य

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रस्तावना

नारी चेतना की भूमिका

साहित्य में से अगर 'नारी' शब्द को हटा दिया जाये तो साहित्य का सौहार्द रसहीन हो जायेगा। नारी ही एक एसी शक्ति है, जिसके बलबूते साहित्य में चार- चाँद लग जाते है। हिन्दी साहित्य में भी अधिकांश साहित्यकारों ने नारी को अपनी कलम के झरियों सँवारने का कार्य किया है। भारतीय नारी के जीवन को लेकर डॉ. अमर ज्योति का यह कथन द्रष्टव्य है:-

" सन् 60 के बाद भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य में स्वी जीवन परम्परागत मान्यताओं से एक बारगी दूर रहकर अपने विकास की नई भावभूति तलाशने लगा । भारतीय स्त्री शिक्षित, अशिक्षित, घरेलू एवं कामकाजी, शहरी एवं ग्रामीण तथा आँचलिक सभी क्षेत्रों की नारी की मानसिकता में बदलाव के चिन्ह कहीं कम और कहीं ज्यादा दिखाई देने लगे हैं।"

दो मानव रूप स्त्री और पुरुष इस दुनिया में दोनों को स्त्री-पुरुष को साथ- साथ रहना है जीवन-मृत्यु के दौरान दोनों साथ-साथ रहते हैं जिन्दगी में आनेवाले संघर्ष, प्रेम, कर्तव्य, फर्ज, भावना, सहानुभूति तादात्म्य और आत्मीयता इन सभी भावों को बातों को दोनों अनुभव करते हैं और इन पर दोनों का अधिकार है।

'चेतना' शब्द का अर्थ

'चेतना' शब्द का संबंध मनोविज्ञान से है, अंग्रेजी में 'चेतना' शब्द का समानार्थी शब्द 'काशसनेस' है। हिन्दी में 'चेतना' शब्द को व्यापक अर्थ में लिया गया है। 'चेतना' शब्द बुद्धि, ज्ञान, मनोवृत्ति, स्मृति, सुधी, होश, संज्ञा, समझना एवं विचारणा तथा जागृति आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। संस्कृत के साहित्यकारों ने 'चेतना' शब्द को 'प्रज्ञा' कहकर संबंधित किया है। 'चेतना' मनुष्य के मस्तिष्क की आत्मिक जागृतावस्था, किसी वस्तु के विषय में ज्ञान, जानकारी अथवा विचारों को संपादित करता है।

मनुष्य का एक स्वाभाविक गुण है- संवेदनशीलता । मनुष्य के आसपास के वातावरण में अनेक घटनाएँ और परिस्थितियाँ घटित होती है। उन घटनाओं के द्रश्य और अनुभव का मनुष्य के कोमल हृदय पर तुरंत ही प्रभाव

पड़ता है, जिसके परिणाम स्वरुप भाव विभोर होने के कारण उसके मन में अनेक विचारों का उद्देलन होता है। 'चेतना' तथा व्यवहारों का ज्ञान 'चेतना' की प्रमुख विशेषताएँ हैं- निरंतर परिवर्तनशीलता, गतिशीलता अथवा प्रवाह 'चेतना' मनुष्य की जागरुकता और सजगता है और मनुष्य की यह जागृति समाज के कारण ही होती है। किसी भी मनुष्य की चेतना उसकी व्यक्तिगत सम्पति न होकर एक सामाजिक उपक्रम का ही परिणाम होती है। मनुष्य के अचेतन मन में अनेक सुषुप्त भावनाएँ, विचार और सपने पडे हुए होते हैं। जो उचित अवसर पर खाद पानी मिलने पर बीज में से अंकुरित होने लगते हैं। मनुष्य के ये विचार और भावनाएँ, अज्ञानता का आवरण हटता है और ज्ञानरूपी रोशनी का प्रकाश फैलता है, तब तुरंत ही मनुष्य सचेत हो जाता है और उसके सारे भाव अचेतन मन से चेतन मन तक पहुँचते हैं और फिर उसी के अनुसार वह अपनी क्रिया-प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, जिसे हम चेतना कह सकते हैं।

अध्यन का उद्देश्य :-

1. भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन
2. नारी चेतना विषयक विभिन्न द्रष्टिकोण

चेतना की परिभाषाएँ

'चेतना' की परिभाषा नहीं दी जा सकती, हम केवल अनुभव कर सकते हैं कि 'चेतना' क्या है? धर्म, श्रद्धा, आध्यात्मिकता, ईश्वर, जीव, जगत जैसे अनेक ऐसे शब्द है, जिसकी सटीक परिभाषा नहीं दी जा सकती ये शब्द अपरिभाषेय होते हैं। 'चेतना' भी उन्हीं में से एक है।

अर्थशास्त्र के अनुसार सम्मत परिभाषा वह होती है, जो प्रमेय के उचित स्थान का निर्धारण करती हो और प्रमेय निर्धारण के लिए पहली और अंतिम शर्त होती है ।

जाति और भेदक की जानकारी यहाँ यदि प्रमेय के उचित स्थान का निर्धारण करते हुए 'चेतना' की परिभाषा देनी ही है। अखिल सृष्टि के असंख्य जड़ पदार्थ उसकी जाति होगी और चेतन पदार्थ का वह गुण, जो मनुष्य और मनुष्योत्तर के बीच में फर्क स्थापित करता है अर्थात् चेतनातत्व जो सिर्फ मनुष्य मात्र की ही पहचान है।

लेकिन मनुष्य मात्र को जाति तत्व में रख देने से प्रश्न हल नहीं हो जाता, क्योंकि उसे जाति तत्व में रख देने से उसको वर्ग उपवर्ग में विभाजित करने की एक ओर नई समस्या उभर आती है कहने का तात्पर्य है कि चेतना की तर्कशास्त्र की कसौटी पर खरी उतरने वाली एक सम्मत परिभाषा देना कठिन है।

आज हम प्रकृति के निरंतर विकसित उस चरम बिन्दू पर है जहाँ पर हर जीवित व्यक्ति और उसकी सोच समझ की प्रक्रिया में विविधता की कोई सीमा नहीं है, तब वहाँ मनुष्य मात्र का अस्तित्व सिद्ध करनेवाली 'चेतना' की परिभाषा दे पाना आसान नहीं है। फिर भी मैंने कुछ विद्वानों की दी हुई परिभाषाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

चेतना: मनोवैज्ञानिक शब्द

'चेतना' का प्रयोग जिस मनोवैज्ञानिक अर्थ में स्वीकृत हुआ है, उस मनोविज्ञान की सहायता से चेतना के पारिभाषिक अर्थ को समझाने का प्रयत्न किया जा सकता है। यों भी 'चेतना' मूलतः मनोवैज्ञानिक शब्द है।

मनोविज्ञान के पिताश्री सिग्मंड फ्रोइड ने मानवीय मन को चेतना के सीर पर तीन हिस्सों में विभक्त किया है। (1) अहम् इगो, (2) सुप्राहम सुपर इगो और (3) इदम- इगो । परन्तु इन तीन स्तरों के बीच की सीमा रेखाएँ इतनी धुंधली एवं अस्पष्ट होती है कि इन्हें अलग-अलग निश्चित लक्षणों के आधार पर विभाजित करना मुश्किल है, क्योंकि एक स्तर की विशेषताएँ दूसरे स्तर में मिली हुई होती है।

संक्षेप में कह सकते है कि यद्यपि मनोविज्ञान मानवीय मन को 'चेतना' के स्तर पर तीन हिस्सों में विभाजित करके 'चेतना' को समझाने का प्रयत्न करता है, तो उसके विभिन्न स्तरों के बीच की सीमा रेखाओं को अलग-अलग निश्चित लक्षणों के आधार पर विभाजित करके, चेतना की पारिभाषिक संकल्पना करना मुश्किल है।

वास्तव में मनोविज्ञान शायद अभी 'चेतना' के स्वरूप निर्धारण में उतना आगे नहीं बढ़ पाया है, जितनी की उसकी चर्चा हुई है। इधर कुछ विद्वानों का स्पष्ट मत है कि जब 'चेतना' ही सभी पदार्थों को जड़-चेतन, सजीव-निर्जीव, मस्तिष्क स्नायु आदि की बनाती है तथा इनके द्वारा हम चेतना को कैसे समझ और समझा सकते है ? असल में इनके द्वारा चेतना को समझने की कोशिश करना ही अविचार है। चेतना की संकल्पना के सन्दर्भ में मनोविज्ञान तथा मनोवैज्ञानिकों की चाहे जो भी धारणा हो, यहाँ हमने चेतना के विस्तृत अर्थ को प्रकट करने का यत्न किया है।

चेतना का वर्गीकरण :-

चेतना के स्वरूप की स्पष्टता करने के बाद यहाँ पर हम यह देखने का यत्न करेंगे कि चेतना को किस रूप में वर्गीकृत किया जा सके? अब हम चेतना का वर्गीकरण विस्तृत रूप में जानने का प्रयत्न करेंगे।

'चेतना' शब्द अपने आप में ही एक बड़ा अर्थ निहित करता है। हमारा इतिहास, संस्कृति, धर्म, सभ्यता, साहित्य, राजनीति, दर्शन जहाँ देखों वहाँ चारों ओर 'चेतना' की सुंदर किरने ही दिखाई देती है। इसलिए हम चेतना के वर्गीकरण को किसी एक दायरे में नहीं बाँध सकते। जिस प्रकार समाज को राजनीतिक एवं साहित्यिक धरातल पर देखने का हमारा कर्तव्य है, वैसे ही 'चेतना' को भी विविध रूपों से तरासने के बाद ही हम निष्कर्ष पर पहुँच सकते है।

वैसे तो 'चेतना' शब्द को वर्गीकृत करने का कई विद्वानों ने यथार्थ प्रयास किया है, लेकिन यहाँ पर हम साहित्यिक वर्गीकरण पर समझने का प्रयत्न करेंगे । साहित्यिक धरातल पर हम चेतना शब्द को आठ भागों में विभाजित कर सकते है।

1. सामाजिक चेतना
2. धार्मिक चेतना
3. ऐतिहासिक चेतना
4. भौगोलिक चेतना
5. राजनीतिक चेतना
6. आध्यात्मिक चेतना
7. बाल चेतना और
8. संत चेतना ।

पश्चिम में नारी मुक्ति आंदोलन

सर्वप्रथम अठारहवीं शताब्दी में 'मेरी वाल स्टोन क्राफ्ट' ने इग्लैंड में नारी के अधिकारों के लिए आवाज उठाई थी। विपरीत परिस्थितियों में अदम्य साहस दिखाने के कारण आज भी उसे मुक्ति आन्दोलन की सूत्रधार कहा जाता है, तदुपरान्त 1884 ई. में फ्रांस की फ्लोरा ट्रिस्टन' ने महिलाओं की माँगे प्रस्तुत करने के लिए एक महिला संगठन की स्थापना की। इंग्लैण्ड की 'कैरोलीन नार्टस' ने महिलाओं को पुरुष के समान अधिकार दिये जाने की माँग को लेकर आन्दोलन शुरू किया, कुचल दिया गया था। जान स्टुअर्ट मिल ने इंग्लैण्ड में अपनी पुस्तक 'द सब्जेक्शन आफ विमेन' द्वारा नारी मुक्ति और उसके मताधिकारों के लिए आवाज उठाई ।

भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन

भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन कब हुआ था इसका प्रमाणित समय बताना कठिन है। इसके बारे में कोई निश्चित प्रमाणित सामग्री उपलब्ध नहीं है उतर वैदिक काल से नारी पर जैसे-जैसे बन्धन जटिल होते गये उसमें मुक्ति की कामना भी तीव्र होती गई। पर कालान्तर में नारी ने अपने जीवन की स्थितियों को नियति मान उसे लगभग स्वीकार कर लिया। मध्यकाल से नवजागरण काल तक का इतिहास इसी समझौते का प्रत्यक्ष प्रमाण है भारत में नारी की मुक्ति का अर्थ पुरुष सता से मुक्ति कभी नहीं रहा । राष्ट्रीय समस्याओं की स्त्रियों ने प्रारम्भ से पुरुषों के साथ मिलकर ही सुलझाया। भारत पर जब कभी आक्रमण हुए उस समय राज्य का प्रशासन स्वयं सँभाल, युद्ध के लिए पति और पुत्रों में साहस का संचार करनेवाली स्त्रियों की अनेक कथाएँ इतिहास में हैं । 1857 ई. के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, जमानी बेगम, देवी चौधरानी कितूर की रानी चेनम्मा जैसी वीर महिलाओं ने अपनी राष्ट्रीय चेतना का परिचय दिया ।

भारत में सामाजिक पुनर्जागरण और राजनीतिक चेतना का विकास साथ-साथ हुआ है। इस काल में भारतीय समाज को अज्ञानता, गरीब, शोषण, दासता और परम्परागत रूढ़ियों से एक साथ संघर्ष करना पड़ा। भारतीय नारी सदियों से पुरुष- प्रधान व्यवस्था और पतनोन्मुख सामाजिक स्थितियों में रहने को बाध्य थी उसकी गणना धीरे-धीरे दलित वर्ग में होने लगी। भारत का अधिकांश सामाजिक सुधारवादी आन्दोलन नारी जीवन के सुधार को ही अपना लक्ष्य मानता रहा है। भारतीय नारी के मुक्ति संघर्ष को सामाजिक व राजनीतिक स्तरों पर अलग करके नहीं देखा जा सकता। भारतीय नारी का यह मुक्ति संघर्ष उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही शुरु हो गया था। जब बंगाल में ब्रह्म समाज, बम्बई में प्रार्थना समाज व उत्तर भारत और पंजाब में आर्य

समाज की स्थापना हुई ये तीनों संस्थाएँ समाज सुधार को लक्ष्य बनाकर कार्य करती रही। इन्होंने अपने कार्यक्रमों में नारी जागरण को प्रमुख स्थान दिया । राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानंद, महादेव रानाडे जैसे सुधारकों ने नारी की स्थिति को परखा। उन्होंने स्त्री शिक्षा को महत्व दिया।

सन् 1829 ई. में सती प्रथा को कानूनन समाप्त कर दिया गया। सन् 1856 ई. में विधवा विवाह को कानूनी मान्यता दी गई। ये दोनों कानून स्त्रियों को सामजिक अन्याय से मुक्ति दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम थे लेकिन इन कानूनों या सुधारों की सफलता के लिए स्त्री शिक्षा एक अनिवार्य शर्त थी प्रमुख शिक्षा शास्त्री श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने इसी कमी को दूर करने के लिए अथाग प्रयास किया, फलस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पहला महिला महाविद्यालय बेडले कोलेज- कलकता में स्थापित हुआ। लेकिन स्त्री शिक्षा की प्रगति फिर भी बहुत धीमी रही । सामाजिक रूढ़िवाद इसमें सबसे बड़ी बाधा थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में भारत में थियोसोफिकल सोसायटी की नींव डालने वाली एक विदेशी महिला सुश्री ब्लावत्स्की ने नारी जागरण का कार्य अपने हाथों में लिया । इन्हीं के थियोसोफिकल सोसायटी की बैठकों में ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नींव रखी गई बीसवीं शताब्दी के आरम्भ के आरम्भ में रामकृष्ण परमहंस व स्वामी विवेकानंद की शिष्या मार्गरिट नोबेल ने बंगाल को अपना कार्य क्षेत्र बनाया और भारतीय स्त्रियों में शिक्षा के माध्यम से जागृति लाने का बीड़ा उठाया ।

नारी चेतना विषयक विभिन्न द्रष्टिकोण

नारी चेतना एक संघर्ष है। नारी अपना अस्तित्व स्थापित करने के लिए प्राचीनकाल से लेकर आज तक लड़ती रही है। इस जंग में वह यहीं बताना चाहती है कि उनका स्थान भी समाज में उतना ही है, जितना की पुरुषों का वह पुरुष की तुलना में कतिपय निम्न है। उनकी यह लड़ाई पुरुषों के विरुद्ध में नहीं है, किन्तु अपनी खुद की पहचान बनाने के लिए है।

नारी चेतना को लेकर विभिन्न विद्वानों ने अपनी राय दी है। यहाँ पर हम नारी के विषय में विभिन्न विद्वानों के मत को प्रस्तुत करने का यथार्थ प्रयास करेंगे।

हिन्दी की आलोचक लेखिका डॉ. वैशाली देशपांडे इस सन्दर्भ में लिखती है कि- "नारी परम्परा से अपने आपको घर की चार दिवारों में कैद करती आ रही है। अपना घर-परिवार उसका समस्त संसार है लेकिन आज धीरे-धीरे नारी बाहरी जगत के सम्पर्क आकर अपने सामर्थ्य को पहचान रही है। नारी को घरेलू मानसिकता से बाहर निकालने के लिए समस्त समाज में जागरण आवश्यक है।

नारी विमर्श को लेकर डॉ. कृष्ण जाखड़ लिखती है- "स्वी मनुष्य होने के नाते अपने बारे में सोचे और उलझनों भरे अंधेरे संसार से बाहर आए, यह नारी विमर्श से का ध्येय है। बहुत से ऐसे सवाल है जिन पर मनन करना जरूरी है और इनकी जड़ों तक पहुँचने के लिए स्त्री का भला चाहनेवालों को संघर्षों से गुजरना पड रहा है। ये सवाल एक छोटे बच्चे से लेकर प्रौढ़ व्यक्ति तक सबको झकझोरते हैं।

आधुनिक हिंदी उपन्यास और स्त्री-विमर्श

स्त्री साक्षात शक्ति है। सृष्टि के विकास क्रम में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। वह सौंदर्य, दया, ममता, भावना, संवेदना, करुणा, क्षमा, वात्सल्य, त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति है। इन्हीं गुणों के कारण उसे देवी कहा जाता है।"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता" : अर्थात् जहाँ नारियों को मान सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक भारतीय स्त्रियों की स्थिति में काफी उतार चढ़ाव आए हैं। वैदिक युग में नारी का जीवन काफी उन्नत एवं परिष्कृत था। ऋग्वेद में स्त्री को यज्ञ में ब्रह्मा का स्थान ग्रहण करने योग्य बनाया है। रामायण और महाभरत काल में स्त्रियों का वर्णन विदूषियों के रुप में कम, गृहस्वामिनी के रुप में अधिक मिलता है। आधुनिक नारी बाहरी तौर पर काफी आगे पहुँची है, लेकिन जितना पहुँचना चाहिए था वहाँ तक नहीं पहुँच पाई है।

स्त्री-विमर्श के युग में स्त्री की स्थिति में आये सब से महत्वपूर्ण परिवर्तन यह है कि वह पुरुष के समान ही जीवन के विभित्र क्षेत्रों में कार्यरत है, लेकिन इसके लिए उसे भीतर और बाहर दोनों ओर से टूटना पड़ता है। वह दिन भर नौकरी करके घर लौटती है, तो उसे पारिवारिक दायित्व भी निभाना पड़ता है। इस संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा जी का वक्तव्य यह है कि "पुरुष के लिए सबसे बडी चुनौती स्त्री ही है। उसको वश में करने के लिए वह जिंदगी भर न जाने कितने प्रयास करता है कि किसी तरह औरत के वजूद को तोड सके।"(1) पुरुषों की निगाहों में स्त्रियाँ उपेक्षिता ही रही हैं। पुरुषों ने उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व के निर्माण के लिए कभी कोई सुविधा नहीं दी है।

जब स्त्रियाँ मानवीयता के लिए प्रतिवाद करती हैं तो उसकी स्वतंत्रता को नकारात्मक अर्थों में ही ग्रहण किया जाता है। समाज में आज भी समूचे मूल्य पुरुष द्वारा निर्मित है। क्षमा शर्मा के अनुसार "पुरुष पचास औरतों के साथ संबंध रखकर अच्छा कहला सकता है, अपने घर लौट सकता है। स्त्री एक प्रेम करके चरित्रहीन कही जा सकती है और अफसोस यह है स्त्री की उस छवि को बनाने में न धर्मशास्त्र पीछे है न ही साहित्य।"

उपसंहार

स्त्री स्वतंत्रता की प्रेरक होने से उन्होंने नारी मन को बड़ी चतुराई और न्यायपूर्णता से अपने साहित्य में अंकन किया है। वे अन्य महिला रचनाकारों की प्रशंसक भी है। उनके साहित्य में स्थित गुणात्मकता के कारण ही उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है। अपने बहुआयामी व्यक्तित्व में पारदर्शिता आस्था की निष्कर्ष दीपशिखा के रूप में वे दृष्टिगोचर होती हैं। अतः लेखिका प्रभा खेतान को इस शताब्दी की बड़ी उपलब्धि माना जाता है। वे स्वभाव से स्पष्टवादी और निडर हैं। समाज जीवन में अनेक कारणों से आई उथल-पुथल उनके लेखन के मूल विषय हैं। एक सशक उपन्यासकार के रूप में मानी जाने वाली प्रभाजी आत्मप्रचार से रहित हैं। युगीन यथार्थ को उन्होंने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्रभा खेतान ने अपने साहित्य जीवन में उपन्यास, कविताएँ, अनुवाद, चिंतनपरक साहित्य पर अपनी कलम चलाई है। उनके 'छिन्नमस्ता', 'पीली आँधी', 'अपने- अपने चेहरे', 'स्त्री पक्ष' आदि उपन्यासों का मुख्य पात्र नारी जीवन का चित्रण करता है पुरानी रूढ़ियों और परंपराओं को तोड़कर विद्रोह करना उनके पात्रों की मुख्य विशेषता है। उनके नारी पात्र अन्याय और अत्याचार के प्रति मुँह मोड़कर चूपचाप नहीं बैठते, बल्कि अपने सामर्थ्य से उसका सामना करते हैं।

संदर्भ

[1] अर्पिता मुखर्जी, 'नारीवाद' सुमित चक्रवर्ती द्वारा संपादित, ओरिएंट ब्लैकस्वान, हैदराबाद, 2016.प्रिंट

[2] आत्मा राम, —अनीता देसाई के साथ एक साक्षात्कार,॥ अंग्रेजी में लिखित विश्व साहित्य, खंड 16। नंबर 1, अप्रैल 1977.

[3] एटवुड, मार्गरिट। —पावर पॉलिटिक्स॥ टोरंटो: हाउस ऑफ अनांसी प्रेस। 1971. प्रिंट। ---. —सर्वाइवल: ए थीमैटिक गाइड टू कैनेडियन लिटरेचर॥ टोरंटो: मैक्लेलैंड और स्टीवर्ट, 2004। प्रिंट

[4] बैट्सन, 2011; डोविडियो, पिलियाविन, श्रोएडर, और पेननर, 2006; पेननर, डोविडियो, पिलियाविन, और श्रोएडर, 2005)।

[5] ब्यूवोइर, सिमोन डे। दूसरा सेक्स. न्यूयॉर्क: विंटेज बुक्स, 1974, पृ. 534.

[6] बेलियप्पा, मीना। "अनीता देसाई: उनके कथा साहित्य का एक अध्ययन।" कलकत्ता, ए राइटर्स वर्कशॉप प्रकाशन, 1971।

[7] बेल्सी, कैथरीन, और जेन मूर। "द फेमिनिस्ट रीडर: एसेज़ इन जेंडर एंड द पॉलिटिक्स ऑफ़ लिटरेरी क्रिटिसिज्म", हाउंडमिल्स, बेसिंगस्टोक, हैम्पशायर: पालग्रेव मैकमिलन, 1997।

[8] बर्नार्ड जे. पेरिस, ए साइकोलॉजिकल अप्रोच टू फिक्शन ब्लूमिंगटन: इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस, 1974

[9] चक्रनारायण मोहिनी, "स्टाइल स्टडीज़ इन अनिता देसाई", नई दिल्ली, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2000. प्रिंट

[10] चक्रवर्ती, राधा. —फिगरिंग द मैटरनल: —स्वतंत्रता॥ और —जिम्मेदारी॥ अनिता देसाई के उपन्यासों में।॥ एरियल। खंड 29, अंक: 2, 1998. प्रिंट करें।

[11] चंदा, गीतांजलि एस. —मैपिंग मदरहुड: द फिक्शन ऑफ अनीता देसाई।॥ जर्नल ऑफ द एसोसिएशन फॉर रिसर्च ऑन मदरिंग। 4.2 (2002)। प्रिंट करें.

[12] चरण सिंह आरबीआई चेयर प्रोफेसर, अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञान, आईआईएम बैंगलोर; भारत में वृद्ध होती जनसंख्या: चुनिंदा आर्थिक मुद्दे; वर्किंग पेपर नं. 442

[13] चटर्जी, मोहिनी. नारीवाद और महिलाओं के मानवाधिकार. जयपुर: आविष्कार पब्लिशर्स, 2004।

[14] चेर्निस, कैरी। "व्यक्तित्व और विचारधारा: महिलाओं की मुक्ति का एक व्यक्तिगत अध्ययन।" मनोरोग 35.2 (1972): 109-25.

[15] चेरी, केंद्र। —लिंग स्कीम सिद्धांत और संस्कृति में भूमिकाएँ।॥ वेरीवेल माइंड, 14 मार्च 2019।

[16] चिटनिस, सुमा। "नारीवाद: भारतीय लोकाचार और भारतीय प्रतिबद्धता।" भारतीय समाज में महिलाएँ: एक पाठक। नई दिल्ली: सेज प्रकाशन, 1988।

[17] कोहेन, योलान्डे। —महिलाओं और शक्ति पर विचार॥ नारीवाद: दबाव से राजनीति तक। नई दिल्ली: रावत प्रकाशन, 2002: 355-57।

[18] कूमी एस. वेवैना, —अफ्रोसेन्ट्रिक फेमिनिस्ट राइटिंग में चुनौतियाँ,॥पृ.220।

[19] कॉट, नैन्सी एफ. आधुनिक नारीवाद का आधार। लंदन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1987।

[20] डी. एच. लॉरेंस, "द रेनबो"। लंदन: पेंगुइन बुक्स, 1949, पृष्ठ 486-91। प्रिंट करें.

[21] डैश, संध्यारानी, "फॉर्म एंड विजन इन द नॉवेल्स ऑफ अनीता देसाई", नई दिल्ली, प्रेस्टीज बुक्स, 1999।

[22] डेविड मैक. रेनॉल्ड्स, "हिस्पटर्स अनलीशेड", सेमुर क्रिम में, संस्करण। द बीट्स ग्रीनविच: फ़ॉ सेट्ट, 1960

[23] देसाई, अनिता। इस गर्मी में हम कहां जाएं? नई दिल्ली: ओरिएंट पेपरबैक्स, 2007।

[24] देसाई, अनिता: —महिला लेखिका॥ क्रेस्ट, अप्रैल/जून 1970. पृष्ठ 65.

[25] देसाई, नीरा और मीना ठाकुर। भारतीय महिलाएँ: अंतर्राष्ट्रीय दशक 1975-85 में परिवर्तन और चुनौती। गाजियाबाद: विमल प्रकाशन, 1984.